भजन

तर्ज– साजन मेरा उस पार है

धनी हमारे प्राणनाथ है
हम सब उन्हीं के सुन्दरसाथ हैं
1– श्री देवचन्द्र जी के तन में
सुन्दरबाई की आतम में
श्यामा जी ने किया वास है
2– श्री मेहेराज जी के तन में
श्री इन्द्रावती की आतम में
पांचों सरुप साक्षात हैं
3– युगल स्वरूप आप विराजे हैं
अंग अंग सुन्दरसाथ साजे हैं
उम्मत ये ही खासलखास है
4– वेद कतेबों में प्रमाण हैं
क्षर अक्षर आगे परमधाम है
रस्ता दिखाये निजनाम है
5– सबका मिटाया ये भरम है
सोई खुदा सोई ब्रह्म है
मुक्त किया संसार है